प्रशिक्षण शिष्यों को प्रशिक्षित करना
सत्र 28: शिष्यत्व की गतिशीलता (11d)

रॉन लाइवली, एम.डिव., एम.ए. द्वारा प्रस्तुत – BiblicalMentoring.org (अध्ययन)

चरण 1: प्रारंभिक प्रार्थना

चरण 2: हर व्यक्ति स्मृति श्लोक उद्धृत करता है: छंद चरण: **2 तीमुथियुस 1:7-8**
7 क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं, बल्कि शक्ति, प्रेम और आत्म-नियंत्रण की आत्मा दी है।
8 इसलिए हमारे प्रभु के बारे में दी गई गवाही पर शर्माओ मत,
न ही मैं उसका कैदी हूँ, बल्कि परमेश्वर की शक्ति से सुसमाचार के लिए दुःख सहने में भागीदार हूँ,

चरण 3: *बाइबल अध्याय के पूरे या कुछ हिस्से को पढ़ें और चर्चा करें* - **2 तीमुथियुस 1**
लिंक: https://www.biblegateway.com/passage/?search=2%20Timothy%201&version=ESV

***चरण 4**: व्यक्तिगत आवेदन और/या समूह चर्चाओं के लिए प्रश्न:*

एक. चूंकि सभी विश्वासियों को जीवन भर पवित्रता की प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है, इसलिए आपके प्रशिक्षुओं में कमजोरियां होंगी जिन्हें आपको एक प्रशिक्षक के रूप में सुधारने में मदद करनी होगी।

दो. आपका काम है कि आप अपने शिष्य का सामना करें यदि वह मसीह जैसा बनना चाहता है।

तीन. क्या आपने यह सीखा है कि पवित्र आत्मा के अधीन किसी अन्य विश्वासी को कैसे सुधारें, फटकारें और प्रोत्साहित करें?

चार. सीखें कि साथ में प्रार्थना करने से कमजोरी को ताकत में बदला जा सकता है। हम सीखेंगे कि इसे करने की रणनीति कैसे विकसित करें।

पाँच. अपने शिष्य की ताकतों को विकसित करने में मूल्य है – केवल उसकी कमजोरियों को उजागर करने में नहीं। उस पर भरोसा करें कि वह एक दिन अपने शिष्यों की मदद करने में कुशल होगा।

***चरण 5**: इस सामग्री को पढ़ें और चर्चा करें, पुस्तक - द मेकिंग ऑफ अ डिसाइपल (नीचे स्रोत देखें):*
लेखक के अनुसार अध्याय 11d – कीथ फिलिप्स:

कमजोरियों को सुधारें

जब मैंने सेवा शुरू की तो मेरे लिए सबसे कठिन कामों में से एक था किसी और को सुधारना। मुझे अस्वीकृति का डर था और डर था कि मैं गलत हो सकता हूँ। एक पुराने उपदेशक ने मेरा पूरा दृष्टिकोण बदल दिया। उन्होंने मुझसे कहा, "तुम केवल एक मुखपत्र हो। अपनी राय या सुझाव मत दो। अगर तुम इसे 'प्रभु ने ऐसा कहा है' से शुरू नहीं कर सकते, तो मत कहो। लेकिन अगर बाइबल कहती है और तुम इसे कहने से डरते हो, तो तुम उस व्यक्ति से प्रेम नहीं करते।" अवश्य ही, तुम्हारे शिष्य के जीवन के ऐसे क्षेत्र होंगे जो अभी मसीह जैसे नहीं होंगे। तुम जिम्मेदार हो कि तुम इन कमजोरियों को उजागर करो और उनसे निपटना (गलातियों 4:19)। तुम तर्क देने के लिए प्रलोभित हो जाओगे, "उसका जीवन कठिन रहा है," या "यह उसकी व्यक्तित्व का हिस्सा है।" लेकिन तुम्हें अपने शिष्य से इतना प्रेम करना होगा कि तुम उसकी कमजोरियों को सुधारने में शामिल हो जाओ। इस उद्देश्य के लिए निम्नलिखित प्रक्रिया सुझाई गई है।

उसकी कमजोरियों को पहचानो।

अपने शिष्य को ध्यान से देखें और उनकी बातों को सुनें। वे उनकी आवश्यकताओं और आध्यात्मिक कल्याण के बारे में आपकी सबसे बड़ी जानकारी स्रोत हैं।

उससे ऐसे सवाल पूछें जो उसे यह व्यक्त करने में मदद करें कि वह कैसा है और उसकी जरूरतें क्या हैं। उसके जीवन, वचन में उसके समय और दूसरों के साथ उसके संबंधों पर ध्यान केंद्रित करें। उसे उन लोगों के साथ जो उस पर अधिकार रखते हैं, अपने परिवार, अजनबियों, विपरीत लिंग और अपने दोस्तों के साथ कैसे जुड़ते हैं, देखें। समझें कि दूसरे आपके शिष्य को कैसे देखते हैं। उनके बारे में की गई टिप्पणियों को सुनें। क्या उनका सम्मान किया जाता है? संभाव्य? पसंद आया? उसके लिखित असाइनमेंट और मेमोरी वर्क देखें। यह सब प्यार में करें, लेकिन ज़रूरत के क्षेत्रों पर ध्यान से ध्यान दें।

अपने शिष्य का सामना करो।

एक बार जब आप कमजोरी पहचान लें, तो इसे अपने शिष्य से चर्चा करें। उससे इतना प्रेम करें कि वह उसका सामना करे। परमेश्वर कहते हैं, "जिन्हें मैं प्रेम करता हूँ, मैं उन्हें डांटता और अनुशासित करता हूँ..." (प्रकाशितवाक्य 3:19 NIV)। यदि आपका शिष्य परमेश्वर की इच्छा से भटकता है, तो उसे सही मार्ग पर वापस बुलाने के लिए साहस दिखाएं। पौलुस "हर एक को प्रोत्साहित कर रहा था, प्रोत्साहित कर रहा था और विनती कर रहा था... जैसे एक पिता अपने बच्चों को करता है" (1 थिस्सलुनीकियों 2:11)। यदि आप कमजोर प्रतिक्रिया देते हैं या अपने शिष्य के विद्रोह से डर जाते हैं, तो उसकी शिक्षा कमजोर होगी। यदि आपका शिष्य आपके सामना का दृढ़ लेकिन प्रेमपूर्ण है तो सकारात्मक प्रतिक्रिया देगा। पौलुस ने तीमुथियुस से कहा कि उसे "सुधारना, फटकार लगाना और प्रोत्साहित करना चाहिए — बड़े धैर्य और सावधानीपूर्वक निर्देश के साथ" (2 तीमुथियुस 4:2 NIV)। लेकिन उसने तीतुस से कहा कि "... ईसाइयों से बात करो... जितना आवश्यक हो उतना कठोरता से ताकि वे विश्वास में मजबूत बन सकें" (तीतुस 1:13 पौंड)। पौलुस कोमल लेकिन सीधे थे जब उन्होंने तीमुथियुस को उसकी संकोचशीलता के बारे में चुनौती दी (2 तीमुथियुस 1)। पौलुस ने तीमुथियुस के प्रति अपने प्रेम की पुष्टि की (पद 1-4) और उनके अंतरंग संबंध के विवरण याद किए (पद 5,6)। फिर, इस व्यक्त निकटता के आधार पर, उन्होंने साहसपूर्वक तीमुथियुस की आवश्यकता को संबोधित किया: "क्योंकि परमेश्वर ने हमें डरपोक आत्मा नहीं, बल्कि शक्ति, प्रेम और अनुशासन की आत्मा दी है। इसलिए, हमारे प्रभु की गवाही या मेरे उसके कैदी से शर्मिंदा मत हो..." (पद 7,8)। अपने टकराव को हमेशा परमेश्वर के वचन और यीशु मसीह के अधिकार पर आधारित रखो। तब तुम उतने ही साहसी और आत्मविश्वासी हो सकते हो जितने मसीह पतरस का सामना करते समय थे: "... मेरे पीछे हो जाओ, शैतान; क्योंकि तुम परमेश्वर के हितों पर नहीं, बल्कि मनुष्य के हितों पर ध्यान केंद्रित कर रहे हो" (मरकुस 8:33)। पौलुस ने लिखा, "... हम प्रभु यीशु में तुमसे प्रार्थना और उपदेश करते हैं..." (1 थिस्सलुनीकियों 4:1)।

अपने शिष्य को बाइबिल के सिद्धांत दिखाएं जो उसके पापी कार्यों और आदतों को उजागर करते हैं। यह स्थापित करेगा कि परमेश्वर का वचन, न कि आपकी राय या अनुभव, उसे सुधारने का आधार है।

हालांकि, हर बार जब आप अपने शिष्य से मिलें तो उससे सामना न करें। कुछ समय पहले मैंने अपने जीवन में इस प्रवृत्ति को देखा। हमारे मंत्रालय की व्यापक प्रकृति के कारण, कुछ कर्मचारी ऐसे थे जिन्हें मैं शायद ही कभी देखता था। जब मैं उन्हें देखता था, तो उनका कारण यह था कि उनके पास एक गंभीर समस्या थी जो मेरी व्यक्तिगत ध्यान की मांग करती थी। कुछ समय बाद एक बहुत स्वाभाविक घटना हुई। जब उन्हें बताया गया कि कीथ उन्हें देखना चाहता है, तो वे अपराधबोध और चिंता महसूस करने लगे। यह भय उस डर जैसा था जैसे एक रोमन ईसाई को कोलोसियम में आमंत्रित किया गया हो, न कि किसी चिंतित भाई से मिलने की उम्मीद जो उससे प्यार करता हो। कोई भी ऐसा रिश्ता नहीं चाहता जो टकराव पर आधारित हो। अपने टकराव को प्रोत्साहन और समर्थन के साथ संतुलित करें। अपने शिष्य की प्रशंसा करें कि वह आपके विकास और उनके सिद्धांतों के अनुप्रयोग के लिए है। साझा करें कि वह आपकी सेवा कैसे करता है। उसे यह पुष्टि जरूर मिलनी चाहिए।

एक बार जब आप अपने शिष्य का सामना कर लें, तो साथ में बाइबल का अध्ययन करें ताकि उसके जीवन में विकसित होने वाली सकारात्मक विशेषता को खोज सकें या उसे स्वयं के लिए मानक खोजने के लिए प्रोत्साहित करें।

साथ में प्रार्थना करें।

केवल परमेश्वर ही जीवन बदल सकता है (1 कुरिन्थियों 3:6)। पौलुस ने अपने मित्रों से प्रार्थना में उसके साथ "पीड़ा देने" के लिए प्रोत्साहित किया (रोमियों 15:30)। यीशु ने वादा किया, "... यदि तुम में से दो पृथ्वी पर किसी भी बात पर सहमत हो जो वे मांगें, तो वह मेरे पिता द्वारा उनके लिए किया जाएगा..." (मत्ती 18:19)। प्रार्थना में इस कमजोरी को शक्ति में बदलने का संकल्प

लो।

एक रणनीति विकसित करें।
रणनीति चरणों की एक श्रृंखला है जो आपके शिष्य को उसके लक्ष्य की प्राप्ति तक ले जाएगी। ये कदम विशिष्ट, स्पष्ट रूप से परिभाषित और प्राप्त करने योग्य होने चाहिए। मैं तीन महत्वपूर्ण तत्व सुझाना चाहता हूँ जो कमजोरी को दूर करने के लिए हर रणनीति में शामिल होने चाहिए।

1. बाइबल अध्ययन. *कई लोग बाइबल का अध्ययन नहीं करते क्योंकि वह उन्हें डांटती है। लेकिन परिवर्तन "शास्त्रों के प्रोत्साहन..." के माध्यम से होता है। (रोमियों 15:4)। परमेश्वर उन लोगों को भरपूर आशीर्वाद देता है जो उसकी आज्ञा मानते हैं। जॉर्ज एक स्टाफ सदस्य था जो अक्सर अपनी रिपोर्टें देर से जमा करता था। उसके नेता ने इस असुविधा को समझाया, लेकिन जॉर्ज इस कमजोरी को तब तक ठीक नहीं कर पाया जब तक उसने छोटी-छोटी बातों में वफादारी के बारे में अध्ययन नहीं किया। इसने उसका दृष्टिकोण बदल दिया। ऐसे अंशों का अध्ययन जो सीधे समस्या से बात करते हैं, रणनीति में शामिल होना चाहिए।*

2. सकारात्मक मॉडल. *आपका शिष्य मसीह का अनुसरण करना सीखेगा, आपको और अन्य परिपक्व विश्वासियों को देखकर जो आवश्यक गुणों के सकारात्मक मॉडल प्रस्तुत कर सकते हैं। पतरस ने बुजुर्गों से कहा कि वे झुंड के लिए उदाहरण बनें (1 पतरस 5:1-3)। पौलुस ने फिलिप्पियों को प्रोत्साहित किया कि "मेरे उदाहरण का अनुसरण करने में दूसरों के साथ जुड़ो, भाइयों, और उन लोगों को ध्यान में रखो जो हमारे द्वारा दिए गए पैटर्न के अनुसार जीते हैं" (फिलिप्पियों 3:17 NIV)। आपके जीवन यह दिखाएँगे कि शिष्य अपनी कमजोरी के क्षेत्र में परमेश्वर की आज्ञा मानने की संभावना रखता है। उसे आवश्यक गुण के संपर्क में आना चाहिए। एक उदाहरण परिवर्तन का एक शक्तिशाली कारक है।*

3. व्यावहारिक उपयोग। *याकूब 1:22 (RSV) हमें प्रोत्साहित करता है कि "... वचन के कर्ता बनो, केवल सुनने वाले नहीं। तुम्हारा शिष्य विशिष्ट अनुप्रयोग के माध्यम से बढ़ेगा। उसे उन गतिविधियों में शामिल करें जो उसकी कमजोरी को सुधारने में मदद करें। उदाहरण के लिए, वह समूह बैठक के बाद सफाई करके सेवकत्व सीखेगा। उसे ऐसी गतिविधियों में भाग नहीं लेना चाहिए जो उसकी कमजोरी के क्षेत्र में परिपक्वता के लिए हानिकारक हों। बाइबल अध्ययन का नेतृत्व करना उसके गर्व को बढ़ावा दे सकता है और प्रतिकूल हो सकता है। आपका शिष्य इस रणनीति को अपनी रणनीति के रूप में देखना चाहिए, न कि वह जिसे आपने उस पर थोपा है। जहां संभव हो उसके विचारों को शामिल करें। पुष्टि करें कि आप इस योजना का पालन करने में उसका समर्थन और प्रोत्साहन करेंगे।*

उसे जवाबदेह ठहराओ. *हालांकि यह एक लंबी प्रक्रिया है, यह उत्कृष्ट समय प्रबंधन है। यदि आपका शिष्य सिद्धांतों को समझता है और उन्हें लागू करना जानता है, तो वह अपने जीवन और उन लोगों के जीवन में भविष्य की कमजोरियों से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए सक्षम होगा जिनका वह नेतृत्व करेगा। समान रूप से महत्वपूर्ण यह प्रक्रिया आपके प्रेम की पुष्टि करेगी और उसके विश्वास को मजबूत करेगी कि आप हर निर्णय में परमेश्वर की इच्छा की खोज करते हैं। चूंकि विश्वास समर्पण का आधार है, इसलिए इस तरह उसकी कमजोरियों से निपटना उसे खुशी-खुशी परमेश्वर के अधिकार के अधीन होने में मदद करेगा।*

उसकी ताकतों का विकास करें
अपने शिष्य की वृद्धि को बढ़ावा देने और उसके ईश्वर-प्रदत्त उपहारों को विकसित करने के लिए, आप उसकी ताकतों को विकसित करने के लिए जिम्मेदार हैं। सबसे पहले, सुनिश्चित करें कि उसकी स्पष्ट ताकतें गर्व का स्रोत न हों। यदि वे हैं, तो उन्हें कमजोरियों के रूप में देखें। फिर उसकी ताकत के क्षेत्रों को विकसित करने के लिए एक रणनीति बनाएं। इस रणनीति में बाइबल अध्ययन, सकारात्मक मॉडल और ऊपर चर्चा किए गए व्यावहारिक अनुप्रयोग शामिल होने चाहिए। यह आदर्श है यदि आप एक ऐसा प्रोजेक्ट सौंप सकें जो कमजोरी को सुधारे और साथ ही ताकत विकसित करे। रूथ संगठन में कमजोर थीं, लेकिन सेवा में मजबूत थीं। इसलिए, हमने उन्हें हमारे लॉस एंजिल्स स्टाफ के भोजन की देखरेख की जिम्मेदारी दी। इसमें मेनू की योजना बनाना, खरीदारी का आयोजन करना और रसोइयों को नियुक्त करना शामिल था। उनकी सेवा ने दूसरों को स्वेच्छा से अपना काम करने के लिए प्रेरित किया। इससे उनकी ताकत बढ़ी। और रूथ एक अच्छी आयोजक बन गईं, अपनी कमजोरी को सुधारने की। आपकी प्रार्थना के जवाब में, भगवान आपको अपने शिष्य में अविकसित ताकतों को देखने के लिए विवेक देंगे। किसी भी परियोजना के पूरा होने पर, अपने शिष्य की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करें। उससे पूछें कि क्या काम किया। यह क्यों काम किया? क्या काम नहीं किया? क्यों नहीं? आप कैसे सुधार कर सकते हैं? क्या हासिल किया गया? परियोजना मूल्यांकन के अलावा, अपने शिष्य लक्ष्यों की पुनः समीक्षा और चर्चा करें। क्या आपका शिष्य पूरी तरह से काम करता था? तुरन्त? सुसंगठित? सृजनकारी? क्या वह अच्छी तरह से काम सौंपता था? क्या वह दूसरों के प्रति संवेदनशील और निर्माण करता था? क्या उसने पहल की? उसने क्या सीखा? अंत में, अपने शिष्य को प्रोत्साहित और प्रशंसा करें। फिर जब कोई और, अधिक कठिन कार्य आए, तो उसे सर्वोच्च प्रशंसा दें—उसे सौंपें।

शिष्य की चेकलिस्ट – शिष्यत्व की गतिशीलता
मैं सुनिश्चित करता हूँ कि मेरे शिष्य के आध्यात्मिक वातावरण में शामिल हो:
___आराधना – एक आराधना की भावना जो सर्वशक्तिमान परमेश्वर के प्रति हमारे प्रेम, विस्मय और सम्मान को व्यक्त करती है।
___मंत्रालय – एक-दूसरे को बनाना और शिक्षित करना।
___स्मरण – अपने दिलों में परमेश्वर के वचन को छिपाना।
___ध्यान – ईश्वर-चेतना की ओर प्रयास।
___शिक्षण -
___आदि
___how सोचने की
निर्णय लेने ___how।
___कमजोरियों को सुधारना।
___ताकतों का विकास।

पृष्ठ 128-133

चरण 6: *व्यक्तिगत प्रार्थना अनुरोध साझा करें, फिर प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे की मांगों के लिए प्रार्थना करे।*

स्रोत: डॉ. कीथ फिलिप्स द्वारा द मेकिंग ऑफ अ डिसाइपल। प्रकाशक: फ्लेमिंग एच. रेवेल कंपनी, 1981। ISBN 0-8007-1181-5। परिचय: रॉबर्ट ई. कोलमैन। सामग्री (अध्ययन प्रश्नों को छोड़कर) पुस्तक से बिना संशोधन के ली गई है।

संशोधित 20261123